ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 69-73

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

एक अचर्चित साहित्य मनीषी : डॉ0 प्रताप सिंह चौहान

पुनीत कुमार सिंह

शोध अध्येता–हिन्दी, शोधकेन्द्र– युवराज दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर–खीरी (उ0प्र0) भारत

Received-26.07.2022, Revised-01.08.2022, Accepted-06.08.2022 E-mail:kumarpuneet17015singh@gmail.com

सारांश:– *गम्भीर अध्यवसायी प्रकृति के डॉ0 प्रताप सिंह चौहान की अभिरुचि हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त अन्य विविध विषयों के अध्ययन में भी थी। इसके साथ ही उनकी अभिरूचि अध्यात्म में भी थी। उनके आध्यात्मिक जीवन के अनेक पहलू हैं। उनके मित्रों, शिष्यों, सहकर्मियों तथा पारिवारिक लोगों ने अलग–अलग रूपों में देखा–समझा और महसूस किया। कुछेक लोगों के अनुभव को अध्यात्म शीर्षक के अन्तर्गत साझा करना उचित जान पड़ता है। उनकी साहित्यिक अभिरूचि कापता उनकी प्रकाशित पुस्तकों की लम्बी श्रृंखला से लगाया जा सकता है। असाधारण व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी डॉ0 प्रताप सिंह चौहान ने अपनी विशिष्ट और मौलिक दृष्टि से हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है, किन्तु यह आश्चर्यजनक है कि साहित्य समाज में उन्हें अथवा उनके कृतित्व को विमर्श का विषय नहीं बनाया गया।*

कुंजीभूत शब्द– गम्भीर अध्ययन प्रकृति, अभिरूचि अध्यात्म, व्यक्तित्व, कृतित्व, मौलिक दृष्टि, समीक्षा, अतिक्रमण, मितभाषी।

उत्तर प्रदेश के लखीमपुर–खीरी जनपद में स्थित युवराजदत्त महाविद्यालय में सन् 1952 में डॉ0 प्रताप सिंह चौहान नाम का एक व्यक्तित्व हिन्दी प्रवक्ता पद के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया। अति शीघ्र ही उनकी विद्वता की चमक सुदूर तक हिन्दी साहित्य–समाज में और सन्त स्वभाव की आभाजनपद की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए विस्तृत परिक्षेत्र में फैल गयी। असाधारण व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी डॉ0 प्रताप सिंह चौहान ने अपनी विशिष्ट और मौलिक दृष्टि से हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है, किन्तु यह आश्चर्यजनक है कि साहित्य समाज में उन्हें अथवा उनके कृतित्व को विमर्श का विषय नहीं बनाया गया। अतः यह आवश्यक लगने लगा कि डॉ0 प्रताप सिंह चौहान के व्यक्तित्व और कृतित्व का नये सिरे शोधपरक अध्ययन किया जाए।

डॉ0 प्रताप सिंह चौहान का जन्म सन् 1913 ई0 में उन्नाव जनपद के ग्राम विजईखेड़ा में हुआ था। इनके पिता का नाम बिन्दादीन चौहान था जो फौज में आरक्षी के पद पर कार्यरत थे। बिन्दादीन तीन भाई थे। जिसमें सबसे बड़े श्री बिन्दादीन, दूसरे श्री रामपाल और सबसे छोटे श्री सीताराम जी थे। बिन्दादीन के चार पुत्र हुए। सबसे बड़े पुत्र श्री प्रताप सिंह तदुपरान्त श्री गणपति सिंह, श्री रामदयाल सिंह और श्री राम सिंह जी थे। बचपन से ही प्रताप सिंह चौहान सीधे–साधे, मितभाषी और आज्ञाकारी स्वभाव के थे। उम्र बढ़ने के साथ उनके स्वभाव में और अधिक परिपक्वता आती गयी। परिवार का वातावरण बेहद सांस्कारिक एवं धार्मिक था। अतः पारिवारिक वातावरण का भी गहरा प्रभाव प्रताप सिंह जी के व्यक्तित्व पर पड़ा।

शिक्षा दीक्षा–डॉ0 प्रताप सिंह चौहान की प्राथमिक एवं मिडिल तक की शिक्षा अपने गाँव विजईखेड़ा के बगल के गाँव मूरतपुर में हुई। हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षा मौराँव, जनपद उन्नाव में प्राप्त हुई। स्नातक एवं परास्नातक की परीक्षा जनपद के सुभाष नेशनल डिग्री कॉलेज से उत्तीर्ण की। जो आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था। आगरा विश्वविद्यालय से ही सन् 1962 ई0 में डॉ0 भगीरथ मिश्र जी के निर्देशन में पी0एच–डी0 की डिग्री प्राप्त की। साहित्यरत्न की उपाधि उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से डॉ0 रामकुमार वर्मा के कर कमलों द्वारा संवत् 2002 में प्राप्त की थी। सन् 1952 ई0 में लखीमपुर खीरी में स्थित युवराज दत्त महाविद्यालय में हिन्दी प्रवक्ता का पद सुशोभित किया। अध्ययन–अध्यापन ही इनकी मुख्य अभिरुचियाँ थीं।

परिवार एवं स्वभाव–डॉ0 प्रताप सिंह चौहान का जन्म संयुक्त परिवार में हुआ था। डॉ0 चौहान अत्यंत पारिवारिक उदारवर्त्ति एवं अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व के स्वामी थे। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात अपने गृह जनपद में ट्यूशन पढ़ाकर आजीविका चलाई और परास्नातक की पढ़ाई पूरी की।

डॉ0 साहब का स्वभाव अध्यवसायी था। उनकी रुचि विभिन्न क्षेत्रों में थी। ज्योतिष विद्या में भी रुचि रखते थे। इसकी पुष्टि स्वयं उनकी बहू सुशीला जी करती हैं। सुशीला जी कहती हैं– ''पूज्य श्रद्धेय चाचा श्री त्रिकालदर्शी थे।'' उनकी इस दिव्य शक्ति का अनुभव कई लोगों ने किया। उनमें से एक घटना का जिक्र करते हुए पं0 जमुनादीन 'यमुनेश' की पुत्रवधू श्रीमती रेनू मिश्रा ने बताया कि ''एक बार हम सपरिवार बद्रीनाथ केदारनाथ की यात्रा पर जा रहे थे। पूज्य गुरु जी प्रतिदिन मेरे यहाँ की चाय पीकर ही अपने घर जाते थे। चाय पिलाने के पश्चात् जब मैंने उनसे तीर्थयात्रा की बात बताई, तो उन्होंने तुरंत ही कहा जाओ तुम्हारी यात्रा निर्विघ्न संपन्न हो। हम लोग करीब 10 लोग थे। पहले तो यात्रा के मध्य मेरे पति सुयश के पैर में चोट लग गयी और वे लंगड़ा कर चलने लगे, और फिर जब ट्रेन आई तो सभी लोग तितर–बितर हो गये, कोई किसी डिब्बे

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

में तो कोई किसी डिब्बे में हड़बड़ी में चढ़ गया और हम लोग कुली के पीछे भागते हुए ट्रेन पकड़ने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन ट्रेन चल चुकी थी तब तक मेरे रिश्तेदारों का डिब्बा मेरी आँखों के सामने से होकर गुजरा, मेरे मुँह से चीख निकली कि अरे कोई गाड़ी रोको, न जाने किसने ट्रेन की चेन खींच दी और गाड़ी रूक गयी। मेरी छोटी बेटी बहुत छोटी थी, वह न जाने हमसे कहाँ बिछड़ गयी। हम अपने को कोसिते दुःखी मन से यात्रा कर रहे थे। मुझे यह लग रहा था कि मेरी पुत्री कहीं स्टेशन पर ही छूट गयी है, किन्तु ऐसा नहीं था मेरी बेटी मुझे गाड़ी में ही किसी रिश्तेदार के पास बैठी मिली जबकि उसे मैंने संभाल रखा था।

राम–राम करते हुए जब यात्रा पूरी कर हम लौटे और गुरु जी से मुलाकात हुई तो मैंने उनसे बड़े अधिकार भाव से कहा कि जब आपको मालूम था कि यात्रा में बाधायें आने वाली हैं तो आपने पहले क्यों नहीं बता दिया था। उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया जब तुम लोग सारी तैयारी कर चुके थे, तब हमें बताया था। ऐसे में मैं तुम्हारी यात्रा में बाधक कैसे बन सकता था।"[1]

डॉ0 सुशीला अपने श्वसुर डॉ0 प्रताप सिंह चौहान के व्यक्तित्व के कई पहलुओं को देखा–सुना था। उनके चमत्कारिक व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए लिखती हैं कि "टण्डन जी (डॉ0 प्रताप सिंह चौहान के मित्र) ने बताया कि मेरा परिवार बहुत ही धार्मिक है। मेरे घर में एक पूजा घर है जिसमें सभी धार्मिक ग्रंथ हैं और सभी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं। घर का प्रत्येक सदस्य इच्छानुसार अपने–अपने इष्ट की आराधना प्रतिदिन किसी न किसी रूप में करता है। मेरी पुत्री उमा जिसका विवाह ग्वालियर के जीवाजी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के साथ संपन्न हुआ। बेटी उमा जब उस घर में दाम्पत्य जीवन के पवित्र बंधन में बँधकर अपनी ससुराल पहुँची, तो उन्हें वहाँ एक अनोखा वातावरण देखने को मिला। उन्होंने देखा कि परिवार का कोई भी सदस्य किसी भी देवी–देवता की आराधना में विश्वास नहीं करता, यहाँ तक कि भारतीय संस्कषति की आस्था के पुंज होली, दीपावली, दशहरा, करवाचौथ जैसे कोई व्रत– त्योहारों का उत्सव नहीं संपन्न होता था। बेटी उमा को सभी सुखों के बावजूद ऐसा लगता है कि वह किसी अनोखी ही दुनिया में आ गयी है।

जब वह अपनी ससुराल से लौटकर आयी तो बाबा प्रताप को पकड़कर फूट–फूटकर रोई थी और अपनी अंतर्व्यथा कह सुनायी थी। पुनः विदाई की बेला का शुभ दिन शीघ्र ही आ गया। और बाबा प्रताप ने शुभाशीष के साथ पोती को विदा किया केवल इतना कहकर जाओ बेटी सब ठीक हो जायेगा। और जब वे अगले दिन ग्वालियर पहुँची तो देखा कि उनके ससुर उसी दिन हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथ रामचरित मानस को बाजार से खरीदकर ले आये थे और उसका पाठ भी किया था। यह देखकर वधू उमा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा था और उसके बाद धीरे–धीरे उनके घर का वातावरण धार्मिक होता चला गया। यह डॉ0 प्रताप सिंह चौहान के प्रताप का फल था, अनास्तिक लोगों में आस्तिकता का बीज रोपण होना।"[2]

डॉ0 प्रताप सिंह चौहान के शिष्य सत्यधर शुक्ल अपने गुरु को याद करते हुए उनके स्वभाव के विषय में बताते हैं कि वे साहित्य के मर्मज्ञ मनीषी होने के साथ छात्रों को स्नेह देने वाले व्यक्ति थे। उनके इस स्नेहिल व्यवहार से छात्र बहुत प्रसन्न रहते थे। कक्षा में यदि कोई छात्र प्रश्न पूछता था तो बड़े धीरज के साथ समुचित उत्तर देते थे। छात्र प्रायः संतुष्ट हो जाता था यदि छात्र संतुष्ट नहीं हुआ तो उसे अलग से समय देकर पुनः समझाते थे। उनके इस व्यवहार से छात्र उन्हें बहुत प्रेम करते थे तथा आदर और सम्मान का भाव रखते थे। सत्यधर जी आगे संस्मरण में लिखते हैं–"गुरुवर डॉ0 प्रताप सिंह चौहान जी अपने छात्रों के प्रति बहुत ही उदार, सहृदय और स्नेह प्रदायक थे।

उनका चरित्र अत्यंत महान था। गृहस्थी के भ्रमजाल में वे उलझना नहीं चाहते थे और इसी विचार का उन्होंने पूर्ण दष्ढ़ता से पालन किया। कोई कुछ कहे वे इसकी परवाह नहीं करते थे। जो तय कर लिया, वह वे करते अवश्य थे। यह सुदष्ढ़ संकल्पशक्ति उनकी कोई डिगा नहीं सका। वे जिस पुस्तक या कवि की समीक्षा लिखने का संकल्प ले लेते थे उसे मनसा–वाचा–कर्मणा पूरा करके ही शांति प्राप्त करते थे।"[3]

डॉ0 चौहान के स्वभाव व रहन–सहन की चर्चा करते हुए उनके मित्र सत्यनारायण सिंह लिखते हैं– "डॉ0 चौहान शान्त, सरल गंभीर व स्पष्टवादी, संकोची स्वभाव, मष्दुभाषी प्रबल आध्यात्मिक गहन चिंतन, मनन वाले प्रतिक्षण एक आध्यात्मिक गूढ़ नव कल्पना में सराबोर रहने वाले व्यक्ति थे। उनका पहनावा मूल भारतीय धोती कुर्ता, सदरी का रंग श्वेत या बादामी रहता था। उनी सदरी एक अजायबघर थी उसमें टॉफी, मीठी शक्कर की गोलियाँ, लौंग इलायची, अदरक की गाँठें, विक्स की गोलियाँ, विक्स, बाम, विक्स की नकसुंघनी, छोटी टार्च, छोटा चाकू कुछ सूखी मिठाई के टुकड़ों के अतिरिक्त एक छोटा झोला भी उसमें रखते थे। साथ में एक काला छाता और एक छड़ी भी उनके हाथ में हमेशा रहती थी।

बच्चों को मीठी गोली या टाफियाँ अवश्य बाँटते चलते थे। बच्चे उन्हें देखकर दूर से ही कहने लगते टॉफी वाले बाबा आ रहे हैं। वे गौरवर्ण के घुंघराले बालों वाले अति सुंदर कामदेव के समान मनोहर छवि वाले थे। उन्हें लोग महाविद्यालय में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

दूर से ही देखकर कहते कि दूध जी आ रहे हैं।"[4]

अपने गुरू को याद करते हुए मैमूना खातून लिखती हैं कि "आज मैं गुरूनानक कन्या महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हूँ वह परिस्थितियाँ थीं जो आज शौक बन चुकी हैं। आज यदि मेरे गुरू जी जीवित होते तो कितना प्रसन्न होते इसका अंदाजा मैं ही लगा सकती हूँ क्योंकि शोध कार्य का प्रोत्साहन उनके द्वारा ही हुआ, इस पूरी प्रक्रिया में आपने अपनी मेहनत की कोई दक्षिणा नहीं ली। यहाँ तक की जब शोध कार्य संपन्न हो गया वाक् परीक्षा की तिथि निश्चित हो गई। सैद्धान्तिक व्यक्ति थे इसलिए मेरे लिये मूल्य को लेकर गुरू जी से बात करने का प्रश्न ही नहीं उठता था जब मेरे पिता जी ने किसी के द्वारा कहलवाया कि हम टैक्सी का प्रबन्ध किये देते हैं, आपका उत्तर था उसकी चिन्ता न करें।

मैंने प्रबन्ध कर लिया है, अब तक मैंने किसी भी छात्र या छात्रा से मूल्य नहीं लिया फिर मैमूना को लेकर मेरी एक इच्छा थी कि एक मुस्लिम छात्रा हमारे अन्तर्गत शोध कार्य सम्पन्न करे आज यह सपना पूरा हो चुका है इससे बड़ी दक्षिणा मेरे लिये क्या होगी।"[5]

उपर्युक्त संस्मरणों से स्पष्ट हो जाता है कि डॉ0 प्रताप सिंह का जीवन कथनी–करनी में समानता रखने वाला था। सभी ने उनमें, एक व्यक्ति के रूप में जो श्रेष्ठ व मर्यादापूर्ण गुण होना चाहिए, वह पाया। एक शिक्षक के रूप में जो आदर्श कसौटी होनी चाहिए, वह पाया और एक आध्यात्मिक पुरूष या संत के रूप में जो विचार और आचार होना चाहिए, वह पाया। लगभग सभी ने उन्हें संत स्वभाव का व्यक्ति स्वीकार किया है।

व्यक्तित्व– डॉ0 प्रताप सिंह चौहान का व्यक्तित्व दो आयामों मे विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। एक तो उनकी अभिरूचि अध्यात्म में थी दूसरी ओर साहित्य अध्येता और लेखक के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की। उनके आध्यात्मिक जीवन के अनेक पहलू हैं। उनके मित्रों, शिष्यों, सहकर्मियों तथा पारिवारिक लोगों ने अलग–अलग रूपों में देखा–समझा और महसूस किया। कुछेक लोगों के अनुभव को अध्यात्म शीर्षक के अन्तर्गत साझा करना उचित जान पड़ता है। उनकी साहित्यिक अभिरूचि कापता उनकी प्रकाशित पुस्तकों की लम्बी श्रंखला से लगाया जा सकता है। 'संतमत', 'कबीर साधना और साहित्य', 'विनय पत्रिका विवेचन', 'पंत का काव्य दर्शन', निराला, 'महादेवी की गीत परंपरा', कबीर ग्रन्थावली भाव्य आदि पुस्तकें उनके साहित्यिक अध्येता और लेखक होने का अकाट्य प्रमाण देती हैं।

अध्यात्म– डॉ0 प्रताप सिंह चौहान की साहित्य में अभिरूचि प्राथमिक पाठशाला से ही हो गयी थी। जब वे मात्र 24 वर्ष के थे तभी से उनकी खोज आध्यात्मिक गुरू के लिए तीव्र हो गयी। इस विषय में डॉ0 श्रीराम सिंह अपने संस्मरणात्मक लेख में लिखते हैं "1980 से वे मेरे घर आने लगे। वे अपने आध्यात्मिक जीवन के संबंध में कहने लगे "मेरे प्रथम गुरू स्वामी विज्ञाननन्द जी थे जो विवेकानन्द के शिष्य थे। उन्होंने मुझे 1937 में दीक्षा दी थी। मैं उनके अनुसार साधना करता था। 1938 में मैं उनके आश्रम गया वे भोजन कर रहे थे। वे भोजन के साथ मछली खा रहे थे। मैं निरामिषभोजी परिवार से संबंधित था। अतः मेरा मन घष्णा से भर गया। मैंने उन्हें छोड़ने का निश्चय किया। मैं गुरू खोजने लगा। मुझे उसी वर्ष बाबा राममंगल दास का पता चला। मैंने 1938 में ही उनसे दीक्षा ले ली। मैं तदनुसार साधना करने लगा।"[6]

डॉ0 प्रताप सिंह चौहान की अभिरुचि योग साधना में भी थी। वे नियमित योगाभ्यास करते थे तथा ध्यान लगाते थे। उनके साथ के लोगों का यह अनुभव था कि वे योगभ्यास व ध्यान क्रिया में किसी हद तक उपलब्धि प्राप्त कर ली थी। डॉ0 साहब अन्तर्मुखी स्वभाव के थे इसलिए इन उपलब्धियों पर किसी प्रकार की कोई चर्चा नहीं करते थे। यदि कोई उनकी इन उपलब्धियों की चर्चा अपनी ओर से करता था तो वे कतराते थे।

डॉ0 प्रताप सिंह चौहान जी की अभिरूचि धर्मों और सम्प्रदायों को जानने–समझने में अधिक रहती थी। वे कबीरदास जी की तरह कर्मकाण्ड रहित व्यक्ति थे। अध्यात्म को ही वे जीवन का परम लक्ष्य मानते थे। डॉ0 चौहान राजयोग को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। उनकी प्रबल मान्यता थी कि संसार और ईश्वर दोनों ही विपरीत दिशाओं में है। दोनों दिशाओं में एक साथ चलना असम्भव है। एक दिशा में चलने पर दूसरी दिशा अपने आप दूर होती जाती है। अतः वे मानते थे कि यदि ईश्वर प्राप्ति का आनन्द उठाना है तो संसार से विमोह आवश्यक है।

जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव जी कहते हैं कि "डॉ0 साहब युवावस्था से ही धर्मनिष्ठ थे और साधु–सन्तों से संपर्क की उत्कण्ठा बनी रहती थी। उन्हें पता चला कि श्री अयोध्या जी में एक संतशिरोमणि परमहंस श्री राममंगल दास जी महाराज गोकुल भवन आश्रम में विद्यमान हैं जो जन्मसिद्ध हैं तो डॉ0 साहब तुरन्त धाम आ गये। श्री महाराज जी के दर्शन कर उनसे बहुत प्रभावित होकर गोकुल भवन में ही रहने लगे। श्री महाराज जी केवल लंगोटी और मारकीन का अचला धारण करते थे अतः डॉ0 साहब भी लंगोटी और अचला धारण करने लगे और श्री महाराज जी के साथ ही उनका कमण्डल थाम कर उनके साथ इधर उधर भी जाने लगे। मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि लगभग सात वर्ष तक इसी रहन–सहन में डॉ0 साहब श्री महाराज

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

जी के साथ रहे। फिर जब श्री महाराज जी को बताया गया कि ये विवाहित हैं और अपना परिवार त्याग कर आये हैं तो श्री महाराज जी ने डॉ0 साहब को अचला–लंगोटी त्यागकर और अपने पूर्ववत् वेश में रहकर अपना गृहस्थ आश्रम स्वीकार करके उसी में निर्वहन करने का उपदेश दिया। तब डॉ0 साहब श्री गोकुल भवन से चले आये किन्तु उनके मन में वैराग्य इतनी प्रबलता से जम गया था कि उन्होंने गष्हस्थी में वापस होना फिर स्वीकार नहीं किया और जीवनपर्यन्त एकाकी जीवन ही व्यतीत किया।'[7]

डॉ0 प्रताप जी सर्वाधिक बल जीवन में नैतिकता को देते थे। वे इस बात के समर्थक थे कि नैतिक मूल्यों का पालन किये बिना मनुष्य आदर्श की प्राप्ति नहीं कर सकता है। यद्यपि की नैतिकता का पालन बहुत दुसाध्य कार्य है इसमें संयम और त्याग की बड़ी भूमिका होती है। वे यह भी कहते थे कि नैतिकता धर्म और अध्यात्म का प्रथम सोपान है।भारतीय धर्म–संस्कृति का चरम लक्ष्य मोक्ष है।

जीवन का सम्पूर्ण वैचारिक एवं व्यावहारिक उद्योग मोक्ष की ओर ही उन्मुख है। यही कारण है कि भारतीय जीवन लोक–कल्याण, लोकोपकार तथा लोक–सुख शांति के लिए साधनाशील स्तर पर प्रयासशील रहता है। भारतीय इतिहास में ऐसी बहुत सी विभूतियों को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है जो सुख–सुविधाओं का परित्याग कर समाजसेवा तथा लोक कल्याण का मार्ग चुना।

गौतम बुद्ध, अशोक, हर्षवर्धन आदि इसीलिए इतिहास में स्मरण नहीं है कि वे एक सुयोग्य सम्राट पुत्र थे या सुयोग्य सम्राट थे बल्कि इसलिए याद है कि उन्होंने अपने जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन कर समाज को समर्पित कर दिया। जीवन में सृष्टि के निर्माण कल्याण की यह जीवन साधना निरन्तर चलती रहती है। इसी अनादि–अनन्त जीवन साधना की काल श्रृंखला से कभी–कभी इतिहास को ऐसे आत्मखोजी महामानव प्राप्त होते हैं जो तमाम मानव समाज की जीवनात्मक चेतना को अपनी उपस्थिति से पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश तथा वायु की दिव्यताओं का बोध प्रदान करते हैं तब तमाम मानव–समाज ऐसे प्रकृति पुरूष में सृष्टि का निर्माण–कल्याण करने वाली योग्यताओं–समताओं का दर्शन करते हैं और तब तमाम मानव–समाज, ऐसे महामानव का अभिनन्दन करता है, उसको प्रणाम करता है, उसकी स्तुति करता है, उसको नमस्कार करता है। और उन तमाम अक्षरों को पढ़ने की आकांक्षा करता है, जो उसके सर्व हितकारी कृतित्व के रूप में मानव–जीवन की काल की पाषाण–शिला पर जीवन–ज्ञान के प्रकाश बनकर उत्कीर्ण हुए हैं।

इसीलिए हम साधारण मनुष्य राम, कृष्ण, गौतम, महावीर नामक आदि दिव्य देवोपम महामानवों के इतिहास एवं साहित्य का अध्ययन कर उनको प्रणाम करते हैं क्योंकि सैकड़ों हजारों वर्ष के बाद भी सृष्टि का निर्माण–कल्याण करने वाली उनकी जीवनात्मक शक्तियों का ग्रहणीय प्रकाश अब भी माननीय समाज को लक्ष्य पथ पर चलने के लिए प्रेरित करने में समर्थ है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आलोक में डॉ0 प्रताप सिंह चौहान का मूल्यांकन किया जाय तो यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि धर्म, दर्शन, अध्यात्म, शिक्षा, परिवार समाज, मानवीय संबंध सभी पर लेखनी चलती रही। डॉ0 प्रताप सिंह जी का संपूर्ण जीवन अध्ययन–अध्यापन ज्योतिष सत्संग साधना, भ्रमण लेखन, आध्यात्मिक चिन्तन आदि साहित्यिक विषय पर रचना करते व्यतीत हुआ।

साहित्य लेखन– हिन्दी साहित्य के संसार में डॉ0 प्रताप सिंह चौहान का नाम एक समर्थ आलोचक, समीक्षक के साथ–साथ चिन्तक के रूप में सदैव याद किया जाता रहेगा। ऐसे मनीषी का व्यक्तित्व तथा कर्षतित्व हिन्दी साहित्य संसार में स्वतः उद्भाषित रहेगा। हिन्दी साहित्य जगत में डॉ0 चौहान का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। डॉ0 प्रताप सिंह चौहान ने स्वाध्याय से लगभग एक दर्जन कृतियों की रचना की है जो प्रकाशित कर्षतियाँ हैं। उनका विवरण निम्नलिखित है–
(1) कबीर साधना और साहित्य (2) विनय पत्रिका का विवेचन (3) पंत का काव्यदर्शन (4) काव्य में प्रयोगवाद की परम्परा (5) प्रयोगवादी काव्य (6) विचार और समीक्षा (7) संतमत में साधना का स्वरूप (8) समीक्षा के नये आयाम (9) निराला (साहित्य) (10) लोकोत्तर महापुरूष आदि (11) परमार्थपथ के प्रसंग भाग–1

कबीर ग्रंथावली भाष्य आपकी अप्रकाशित कृति है। इसके अतिरिक्त अपने युग के विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में अपने गूढ़ आध्यात्मिक विचार और समीक्षायें लिखकर ख्याति अर्जित की।डॉ0 प्रातप परम् योगी अरविन्द के जीवन दर्शन से प्रभावित रहे। आपका साहित्यिक चिंतन जीवन दर्शन बनता रहा है।

इस दर्शन से समाज को एक नई सोच व नवीन दिशा मिलती रही है। जो सामाजिक जीवन की प्रत्येक स्थिति, परिस्थिति एवं अवस्थिति में इतनी अधिक प्रभावी सिद्ध हुई है, जो हमें इस सूक्ति की स्वीकारोक्ति की ओर विवश करती है कि वास्तव में साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब होता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 सुशीला सिंह : स्मषति के वातायन से : डॉ0 प्रताप सिंह चौहान (स्मषति ग्रंथ), पष्0सं0 45–46, नमन प्रकाशन लखनऊ, संस्करण–2014.
2. वही, पष्0 47–48.
3. वही, पष्0 38 (सत्यदेव शुक्ला आलेख 'श्रद्धेय गुरु–डॉ0 प्रताप सिंह चौहान : एक तपस्वी साधक, संकलित पुस्तक स्मषति के वातायन से :डॉ0 प्रताप सिंह चौहान, स्मषति ग्रंथ).
4. वही, पष्0 64 (जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव : श्रद्धेय डॉ0 प्रताप सिंह चौहान, आलेख से).
5. वही, पष्0 79.
6. वही, पष्0 56 (डॉ0 श्रीराम सिंह : डॉ0 प्रताप सिंह चौहान और उनका व्यक्तित्व, आलेख से).
7. वही, पष्0 66–67 (जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव : श्रद्धेय डॉ0 प्रताप सिंह चौहान, आलेख से).

*****